BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY, DHANBAD, JHARKHAND

दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय) में पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव

"मौलाना आजाद एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानवतावादी दर्शन: वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता"

शोध-निर्देशक:

डॉ० कृष्ण मुरारी

असिस्टेंट प्रोफेसर (दर्शनशास्त्र विभाग)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोधार्थी :

सुमित महतो

दर्शनशास्त्र विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध शीर्षक :

मौलाना आजाद एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानवतावादी दर्शन: वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

1. विषय प्रवेश : (Introduction) :

प्रस्तावित शोध का विषय **"मौलाना आजाद एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानवतावादी दर्शन : वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता"** है। यह विषय दर्शनशास्त्र के अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा समाजदर्शन एवं नीतिशास्त्र के अंतर्गत आता है। समाजदर्शन मनुष्य एवं समाज से सम्बंधित विषय का व्याख्या करता है एवं नीतिशास्त्र मनुष्य के ऐच्छिक कर्म के संबंध में उचित या अनुचित होने का मानदंड तथा आदर्श प्रस्तुत करता है। समाजदर्शन एवं नीतिशास्त्र में मानव को सबसे ऊपर स्थान दिया गया है। इसलिए समाजदर्शन एवं नीतिशास्त्र में मानवतावाद को बढ़ावा दिया जाता है। मानवतावाद अंधविश्वास एवं अलौकिकवाद में विश्वास नहीं करता।

मानवतावाद मानव-गरिमा, मानव-क्षमता और उनके कल्याणकारी गुणों का विकास करने का एक प्रणाली है। मानवतावाद के माध्यम से मनुष्य के नैतिक, आध्यात्मिक एवं प्रज्ञात्मक गुणों का विकास किया जाता है। मानवतावाद मानव में प्राकृतिक मूल्य और मानवीय गुणों का विकास के लिए एक स्वतंत्र विचार है।

आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य वस्तुवादी एवं आत्म-केंद्रित हो गए हैं। इसलिए मानवसमाज में प्रेम, संवेदनशीलता जैसे मानवीय गुण लुप्त हो रहे हैं। इस गंभीर स्थिति में मौलाना अबुल कलाम आजाद और रवीन्द्रनाथ के मानवतावादी दर्शन मनुष्य के सम्पूर्ण विकास करने में सक्षम रहेगा।

2. साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा : (Preliminary Review of Literature) :

मानवतावाद अलौकिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण को नकारता है और न्याय, नीति एवं तर्क पर अधिक जोर देता है। मानवतावाद मानवकल्याण एवं मानवीय मूल्यों को उजागर करने में सक्षम है। समग्र रूप से मानवसमाज का कल्याण ही मानवतावाद है। मानवतावाद ही आधुनिक मानव- धर्म का मूल रूप है।

दर्शनशास्त्र में मानवतावाद तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में 'इटली' में पहली बार देखा गया था और उसके बाद पूरे यूरोप में फैल गया था। भारत में मौलाना अबुल कलाम आजाद और रवीन्द्रनाथ से पहले भी भारत के बहुत सारे महापुरुषों ने मानवतावाद का प्रचार किया था। वेद और उपनिषद के समय भारत के विभिन्न ऋषि-मुनियों ने नैतिक मूल्य का प्रचार किया था। भारत के वैदिक,

बौद्ध, हिन्दू, ईसाई, और इस्लाम धर्मग्रंथों में भी मानवतावाद का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा नानक, चैतन्यदेव, कबीर के वाणी में भी मानवतावाद की पहचान मिलता है। आधुनिक भारत में मानवतावाद की पहचान भारतीय पुनर्जागरण के महान अग्रदूत जैसे राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, रामकृष्ण, विवेकानंद, विद्यासागर, अरविंद, बंकिमचंद्र, राधाकृष्णन, मानवेंद्र नाथ राय, मौलाना अबुल कलाम आजाद और टैगोर के लेखन और कथन में भी पाए जाते हैं।

मानवतावाद का अंग्रेजी शब्द है "Humanism" (ह्यूमैनिज्म)। लैटिन शब्द "Humanitas" से "ह्यूमैनिज्म" शब्द आया है। "Humanitas" शब्द का अर्थ है 'जीवन का सम्पूर्ण विकास'। अर्थात् जो मानव के विकास का प्रतीक है, उसे ही मानवतावाद कहते हैं। यह एक ऐसा अभिमत है जो केवल लोगों के हितों के बारे में सोचता है। मानवतावाद सभी मनुष्य को एक ही सूत्र में जोड़कर रखता है और उन्हें विश्वचेतना के लिए प्रेरित करता है और विश्वचेतना मनुष्य को संपूर्णता की चेतना की ओर प्रेरित करता है। मनुष्य की सम्पूर्ण-चेतना उसके अंतर्निहित ऊर्जा का पूर्ण विकास में सहायक है। पश्चिमी देशों में मानवतावाद को ज्ञानमीमांसीय और राजनीतिक दृष्टिकोण से वर्णित किया गया है। परंतु भारत में मानवतावाद मुख्य रूप से आध्यात्मिक है। भारतीय दर्शन में मानवतावाद का चर्चा व्यक्ति के आंतरिक क्रम-विकास के रुप में किया गया है।

समकालीन भारतीय दर्शन में मौलाना आजाद मानवतावाद के बहुत बड़े समर्थक थे। उनके जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य था हिंदू-मुस्लिम एकता और देश की अखंडता। उन्होंने धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील राष्ट्र स्थापित करने के लिए भिन्न-भिन्न संस्था और एकेडमी की स्थापना किया था। मानवतावाद, धर्म, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के ऊपर उनका दृढ़ विश्वास था। आजाद के अनुसार समाज की उन्नति के लिए मानवीय दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है। मानवतावाद युगों से हमें नैतिकता और अच्छे जीवन प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन किया है।

मानवतावाद का आदर्श है मानव का सम्पूर्ण कल्याण। युक्ति एवं तर्क के सहारे मानवतावाद का आदर्श स्थापित किया जा सकता है। उनका मानना था कि मनुष्य के उन्नति के लिए मानवतावाद सबसे प्रभावशाली तरीका है। मानवता संकीर्ण मानसिकता के बदले उदारनैतिक मानसिकता पर ज्यादा बल देता है। आजाद का कहना था कि कुरान और मानवतावाद के अधिकतर मत एक है। मानवता की तरह कुरान भी हमें नैतिकता, समानता, स्वतंत्रता, सद्गुण और सामाजिकता का पाठ पढ़ाता है। मौलाना आजाद आजीवन मानव-केंद्रित दर्शन की स्थापना के लिए प्रयास करते रहें। भारत में हिंदू-मुस्लिम एकता एवं राष्ट्र की अखंडता स्थापित करने में मौलाना आजाद का एक महत्वपूर्ण अवदान था।

मौलाना आजाद स्वाधीन भारत के सबसे पहले शिक्षा मंत्री थे। मौलाना आजाद अपनी शिक्षा और दार्शनिक चिंतन से देश और समाज को प्रगति की ओर ले गए थे। उनका मानना था कि एक अच्छा स्कूल राष्ट्रीय संपत्ति है, जिसका किसी भी स्थान या किसी भी समय पर उच्चतम मूल्य है। शिक्षा मानवता के लिए बहुत ही जरूरी है। आजाद के अनुसार "मानवतावाद किसी भी

स्तर में शिक्षा, संस्कृति एवं कला के बिना अधूरा है।"[1] अतः उन्होंने शिक्षा, संस्कृति और कला को मानवीय गुणों के विकास लिए आवश्यक माना।

मौलाना आजाद जीवन की श्रेष्ठता के लिए मानवतावाद की श्रेष्ठता को महत्वपूर्ण मानते थे। मानव की उन्नति के लिए शिक्षा सबसे पहला सोपान है। "एक आदर्श बच्चा ही आगे चलकर मानवतावाद की शिक्षा की सहायता से बेहतर और अच्छा आदमी बन सकता है"[2] - यह मौलाना आजाद मानते थे।

दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ की कविता और कहानी में मानवतावाद का उल्लेख मिलता है। वे मानवतावाद के बहुत बड़े पुजारी थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'द रिलीजन ऑफ मैन' में मानवतावाद के बारे में अपनी भावना को व्यक्त किया है। उनका कहना है कि "मानवतावाद हमें प्रेम की ओर उत्तेजित करता है, ज्ञान की तरफ प्रेरित करता है और हमें हमेशा ही बेहतरीन और अच्छा जीवन प्राप्त करने में मदद करता है।"[3] टैगोर का कहना है आत्मज्ञान केवल आत्म-संघर्ष के माध्यम से प्राप्त हो सकता है। व्यक्तिगत शरीर से समुदाय तक और समुदाय से अनंत तक यह आत्मा की प्रगति है। उन्होंने कहा है कि "मंदिर में भगवान की खोज करना अर्थहीन है, भगवान की प्राप्ति केवल मनुष्य के अंदर ही संभव है।"[4]

मानवतावाद का तात्पर्य है मनुष्य की अपनी आंतरिक शक्ति का परिपूर्ण विकास करना। इसलिए रवीन्द्रनाथ का कहना था कि, प्रत्येक दार्शनिक को ब्रम्हांड के रहस्य सुलझाने के बजाय मनुष्य की वास्तविक समस्याओं से मुक्ति पाने की प्रक्रिया को खोजने का प्रयास करना चाहिए। उनका मानना था कि जीवन में हमेशा सुख की खोज करने के बजाए अपने अंदर असीम एवं अनंत का खोज करना चाहिए।

रवीन्द्रनाथ के अनुसार, मानवतावाद ही मानव का आदर्श धर्म है। अपनी "द रिलिजन ऑफ मैन" ग्रंथ में उन्होंने कहा है कि "मनुष्य में दो तरह की सत्ता है शारीरिक सत्ता एवं आध्यात्मिक – सत्ता।"[5] शारीरिक सत्ता मनुष्य की निम्नतम सत्ता है जो उसे सीमित करता है और आध्यात्मिक सत्ता मनुष्य की उच्चतम सत्ता है जो उसे असीमता की ओर ले जाने में मदद करता है। व्यक्ति की आध्यात्मिक सत्ता ही उसे मानवता की ओर अग्रसर कराता है क्योंकि अपनी बुद्धि प्रयोग के माध्यम से मनुष्य को यह पता चल चुका है कि उसे अपने अलावा दूसरे लोगों के बारे में भी ध्यान देना होगा। अन्य लोगों के बारे में सोचना, उनके साथ एकजुट होना, उनके समग्र हितों के लिए बोलना यह सभी मानवतावाद का संकेत है। रवीन्द्रनाथ के अनुसार, मानव-प्रकृति में अनंत का राज छुपा हुआ है।

रवीन्द्रनाथ मानते थे कि मनुष्य दुनिया का सबसे अच्छा प्राणी है और मानव चेतना सबसे अच्छी चेतना है। मनुष्य की यह चेतना उसे अपनी परिपूर्ण विकास में मदद करता है। इसलिए सभी मानवतावादी दार्शनिकों का लक्ष्य मानव जीवन का परिपूर्ण विकास करना है। इस विकास के परिणाम स्वरूप लोग अपनी 'छोटी अहंकार चेतना' की परिसीमा से ऊपर उठकर अपना स्वरूप प्राप्त करता है।

रवीन्द्रनाथ प्रेम, सहयोग और भाईचारे में विश्वास कर पूरे विश्व के मानवकल्याण की बात करते थे। उनके अनुसार, “मानवतावाद प्रकाश की वह नदी है जो सीमित से असीमित की ओर जाता है।”[6] मानवतावादी दार्शनिक हमेशा मानवकल्याण के लिये कार्य करता है।

मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ दोनों अपनी दार्शनिक चिंतन में मनुष्य को विशेष महत्व दिए हैं। इसलिए दोनों दार्शनिकों ने मनुष्य को सबसे ऊपर स्थान दिया है। रवीन्द्रनाथ और मौलाना आजाद दोनों कहते थे लोगों को निस्वार्थ भावना से चलना चाहिए। मौलाना आजाद और टैगोर दोनों मनुष्य के इमानदार चरित्र गठन के ऊपर महत्व दिया है। दोनों मानते थे कि मानवतावाद और शिक्षा से ही मानव का सर्वोत्तम चरित्र गठन किया जा सकता है। दोनों दार्शनिकों ने मानवतावाद का प्रचार करते हुए सभी लोगों से प्यार करने की और सभी लोगों के हित करने की बात कही है।

भारत में हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए रवीन्द्रनाथ और मौलाना आजाद दोनों का महत्वपूर्न योगदान था। रवीन्द्रनाथ हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए रक्षाबंधन का आयोजन किए थे। उसी तरह मौलाना आजाद ने हिंदू-मुस्लिम एकता बनाए रखने के लिए सभी भारतीयों से भाईचारा बनाए रखने का आवेदन किया था। इन दोनों दार्शनिकों ने शिक्षा के ऊपर विशेष महत्व दिए थे। एक ओर रवीन्द्रनाथ कहते थे कि, “शिक्षा व्यक्तित्व गठन का पहला सोपान है।”[7] दूसरी ओर मौलाना आजाद के विचार में शिक्षा मनुष्य में "आदर्श स्थापित करता है और वही आदर्श आगे चलकर मनुष्य को बेहतर और अच्छा आदमी बनाता है।”[8]

3. समस्या का विधान : (Statement of the problem):

वर्तमान में मनुष्य भौतिकवादी, महत्वाकांक्षी और आत्म-केंद्रित हो गया है। मनुष्य अपने विलासिता पूर्ण जीवन में केवल शारीरिक सुखों को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। इसी कारण सम्पूर्ण विश्व आज सांप्रदायिकतावाद, हिंसा, जातिवाद, आतंकवाद से पीड़ित है। ऐसी गंभीर स्थिति में मानवतावाद का अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है। रवीन्द्रनाथ और मौलाना आजाद अपने जीवन काल में सभी भारतीयों को एकजुट करने एवं मनुष्य की आंतरिक क्षमता को उजागर करने की कोशिश करते रहे। मेरा यह प्रस्तावित शोध कार्य मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ की मानवतावादी दार्शनिक चिंतन का एक दर्पण होगा।

4. समस्या की अनुसंधान : (Problem to be investigated):

इस शोध में सामाजिक एकता निर्माण एवं मनुष्य में आध्यात्मिक गुर्गों को विकसित करने के लिए मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ टैगोर की अवदान का अनुसंधान किया जाएगा। इसके अलावा यह भी चर्चा किया जाएगा कि वर्तमान में मानवतावाद कितना सार्थक, प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण है।

5. शोध का उद्देश्य : (Objective of the research):

मेरे इस शोध कार्य का उद्देश्य मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ के मानवतावाद की अवधारणा का अध्ययन करना है। साथ ही इस शोध कार्य का उद्देश्य मौलाना आजाद एवं रवीन्द्रनाथ का मानवतावादी दर्शन की समानता एवं भिन्नता पर प्रकाश डालना है। साथ ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है - वर्तमान काल में जीवन-यापन हेतु मनुष्य को सामाजिक एकता निर्माण की ओर प्रेरित करना, मनुष्य में आध्यात्मिक, नैतिक और प्रज्ञात्मक क्षमता का विकास करना एवं मानवीय चिंतन प्रवाह को श्रेष्ठता की ओर ले जाना है। क्योंकि मानवतावाद के माध्यम से ही विश्व में शांति लाया जा सकता है।

6. परिकल्पना : (Hypothesis) :

मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ के दार्शनिक चिंतन मानव-केंद्रित है। उन्होंने हमेशा भारत के लोगों को एकजुट करने की कोशिश की है। मौलाना आजाद एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर हमेशा कहते थे कि भौतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक क्षमता की उन्नति के लिए मानवतावाद की धारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेरा धारणा है कि रवीन्द्रनाथ का 'मानव सत्ता' संबंधी अवधारणा, मनुष्य के आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति के लिए हितकर है। दूसरी ओर आजाद का 'धर्मनिरपेक्षता', 'हिंदू-मुस्लिम एकता' संबंधित चिंतन हमें सामाजिक एकता की ओर प्रेरित करता है। अतः मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ का मानवतावाद संबंधित अवधारणा से जगत, जीवन एवं मनुष्य के जीवनधारण से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य उजागर हो सकता है।

7. शोध प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति : (Research design and methodology) :

यह शोध कार्य मौलाना अबुल कलाम आजाद एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर की महत्वपूर्ण मूलग्रंथ एवं महत्वपूर्ण सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा। इसके लिए पुस्तकावलोकन की विधि की सहायता ली जाएगी। यह शोध मुख्यतः नवीन शोध होगा। इस शोध में शोध के व्यावहारिक पहलुओं का भी प्रयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और तुलनात्मक पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

8. तथ्य संकलन : (Tools to be used in the collection of data and analysis) :

तथ्य संकलन हेतु विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा और पुस्तकालयों में उपलब्ध मौलाना अबुल कलाम आजाद एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन कर मानवतावाद से संबंधित तथ्य सामग्रियों को एकत्रित किया जाएगा। शोध

के क्रम में इस विषय पर जानकारी रखने वाले गुरुवर एवं विद्वानो से संवाद किया जाएगा। इस शोध के क्रम में विषय से संबंधित प्रमुख चिंतक एवं विचारोकों का प्रकाशित रचनाएं, शोध-प्रबंध आदि की सहायता ली जाएगी। इसके अलावा विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन एवं मौलाना अबुल कलाम आजाद संस्थान एशियाई अध्ययन, कोलकाता जाकर तथ्य संग्रह किया जाएगा।

9. शोध कार्य का महत्व : (Significance of proposed work) :

वर्तमान समय में मानव प्रवृत्ति मूलतः आत्म-केंद्रित, महत्वाकांक्षी और भौतिकवादी हो गई है। मनुष्य आत्म-केंद्रित हो कर अपने आंतरिक मूल्य एवं संवेदनशीलता का परित्याग कर दिया है। इस स्थिति में मानवतावाद से संबंधित विचारों का अध्ययन हमारी नैतिक एवं आध्यात्मिक सचेतना और परमार्थिक मूल्यों को जगाने में अति आवश्यक है। मानवीय मूल्य को पुनःस्थापित करने में निश्चय ही मौलाना आजाद और टैगोर की मानवतावाद संबंधी विचारों का अपरिमित योगदान रहेगा।

10. वर्तमान ज्ञान में योगदान : (Contribution to the existing knowledge) :

आज सम्पूर्ण विश्व हिंसा, जतिवाद, आतंकवाद, सांप्रदायिकतावाद जैसे बहुत सारे समस्या से पीड़ित है। इसलिए हमें घर, समाज और राष्ट्र के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में भिन्न-भिन्न समस्या का सामना करना पड़ता है। इस समस्या से मुक्त होने के लिए मानवतावाद का अध्ययन वर्तमान में अति आवश्यक है। मानवतावाद के माध्यम से हमें मानवप्रेम, मैत्रीपूर्ण व्यवहार, नैतिक नियम का अनुपालन, दृढ़ निश्चय, सही कर्म करने का ज्ञान मिलता है जो की वर्तमान परिस्थिति में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

11. अनुसंधान की सीमाएं : (Limitations of the research work) :

मानवतावाद के शोध के कुछ सीमाएं है। जैसे-

प्रथम, मानव व्यवहार के संबंध में मानवतावाद बहुत ही सकारात्मक है। अर्थात् मानवतावाद मानता है कि व्यक्ति सहज रूप से अच्छे हैं और अपने जीवन के लिए सकारात्मक रास्ते का चयन करेंगे, हालांकि कुछ व्यक्तियों के लिए स्वतंत्र इच्छा और पसंद सीमित है।

द्वितीय, मानवतावाद में व्यक्तिगत अनुभव पर अधिक जोर दिया गया है परंतु व्यक्तिगत अनुभव का अध्ययन सरल नहीं है।

तृतीय, मानवतावाद मनुष्य के विचार एवं भावना से संबंधित मतवाद है। इसलिए मानवतावाद में व्यक्ति के स्थूल चिंतन से अधिक आंतरिक चिंतन को महत्व दिया जाता है।

चतुर्थ, मानवतावादी जागरूक जागरूकता पर अधिक जोर देता है यह उन्हें दायरे में सीमित करता है क्योंकि मानवतावाद उन विषय की उपेक्षा करता है जो जागरूकता से बाहर हैं।

12. भविष्य में कार्य होने की संभावना : (Future work) :

मानवतावाद का अवधारणा समाज के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह शोध कार्य वर्तमान में ही नहीं भविष्य में भी उपयोगी है क्योंकि मानवतावाद की शिक्षा सर्वयुग में आवश्यक है।

मानवतावाद के बारे में भले ही विभिन्न लोग अलग अलग राय रखते हैं परन्तु मानवतावाद से ही मानव का सम्पूर्ण विकास हो सकता है यह सत्य है। इस कारण इस विषय पर भविष्य में भी शोध कार्य होने की असीम संभावनाएं हैं।

13. संभावित अध्यायीकरण : (Tentative chaptalization) :

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध कार्य के विषय को निम्नलिखित सम्भावित अध्याय में विभक्त किया गया है :-

- प्रस्तावना :
- प्रथम अध्याय: मानवतावाद का इतिहास
- द्वितीय अध्याय: मानवतावाद की समकालीन अवधारणा
- तृतीय अध्यायः मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का मानवतावाद
- चतुर्थ अध्याय : रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानवतावाद
- पंचम अध्याय : मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और रवीन्द्रनाथ टैगोर के मानवतावाद का तुलनात्मक अध्ययन
- षष्ठ अध्याय : वर्तमान संदर्भ में मानवतावाद का प्रासंगिकता
- उपसंहार

➢ प्रस्तावना:-

मानवतावाद मानव-धर्म का मुख्य आधार है। मानवतावाद का अर्थ है मानवजीवन का सम्पूर्ण विकास। मानवता ही मानव का धर्म है। परंतु वर्तमान समय में मानव प्रवृत्ति मूलतः आत्म- केंद्रित, महत्वाकांक्षी और भौतिकवादी हो गई है। मनुष्य आत्म-केंद्रित हो कर अपने आंतरिक मूल्य एवं संवेदनशीलता का परित्याग कर दिया है। इस स्थिति में मानवतावाद संबंधी विचारों का अध्ययन हमारी नैतिक एवं आध्यात्मिक सचेतना और पारमार्थिक मूल्यों को जगाने के लिए आवश्यक है।

मानवतावाद के माध्यम से हमें मैत्रीपूर्ण व्यवहार, मानवप्रेम, नैतिक नियम का अनुपालन, दोस्ताना विचार, दृढ़ निश्चय, सही कर्म करने की प्रेरणा मिलता है जो वर्तमान परिस्थिति में - अत्यंत प्रभावशाली है। मानवीय मूल्य को पुनःस्थापित करने में निश्चय ही मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ का मानवता से सम्बंधित मत का असीम योगदान हो सकता है।

➢ प्रथम अध्याय : मानवतावाद का इतिहास :-

वर्तमान में मानवता का हनन हो रहा है। मनुष्य के सर्वांगीण कल्याण को जो सूचित करता है उसे ही मानवतावाद कहा जाता है। मानवतावाद जगत के प्रत्येक मनुष्य के हित पर ध्यान देता है। यदि व्यक्ति केवल अपनी या अपनी जाति के बारे में ना सोच कर समग्र मानव जाति के मंगल के बारे में सोचे उसे ही मानवतावाद कहा जाएगा। यह एक ऐसा दार्शनिक मत है जो मनुष्य को अपनी संकीर्ण सोच की सीमा को पार कर असीम आनंद की चेतना में विलीन करता है। मानव का आध्यात्मिक चेतना उसके पूर्ण विकास में सहायता करता है।

वर्तमान युग में समग्र विश्व का एक ही धर्म होना चाहिए मानव धर्म अर्थात् मानवतावाद। वर्तमान हिंसा और जातिवाद की स्थिति में मानवतावाद का पहला लक्ष्य है अपने अंदर की बुराई को दूर करके दया, प्रेम, परोपकार, अहिंसा इत्यादि मानवीय गुणों को विकसित करना। मानवतावाद के माध्यम से मनुष्य में मतभेद समाप्त हो सकता है।

मानवतावाद ही आधुनिक मानव-धर्म का मूल रूप है। दर्शनशास्त्र में मानवतावाद तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में 'इटली' में पहली बार देखा गया था और उसके बाद पूरे यूरोप में फैल गया था। भारत में मौलाना अबुल कलाम आजाद और रवीन्द्रनाथ से पहले भी भारत के बहुत सारे महापुरुषों ने मानवतावाद का प्रचार किया था। वेद और उपनिषद् के समय भारत के विभिन्न ऋषि-मुनियों ने नैतिक मूल्य का प्रचार किया था। भारत के वैदिक, हिन्दू, ईसाई ओर इस्लाम धर्मग्रंथों में भी मानवतावाद का उल्लेख मिलता है। इसके अलावा नानक, चैतन्यदेव, कबीर के वाणी में भी मानवतावाद की पहचान मिलता है। आधुनिक भारत में मानवतावाद की पहचान राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी, रामकृष्ण, विवेकानंद, विद्यासागर, अरविंद, बंकिमचंद्र, राधाकृष्णन, मानवेंद्र नाथ राय, मौलाना अबुल कलाम आजाद और रवीन्द्रनाथ के लेखन और कथन में भी पाए जाते हैं।

➢ द्वितीय अध्याय मानवतावाद की समकालीन अवधारणा :-

मानवता ही मानव का आदर्श धर्म है। मानवतावाद से ही मनुष्य का मूल स्वरूप व्यक्त होता है। सबका सर्वांगीण कल्याण हीं मानवतावाद का एकमात्र लक्ष्य है। वर्तमान में मानवता को एक महत्वपूर्ण दार्शनिक एवं धार्मिक मतवाद के रूप में आलोचना किया जाता है। मानवतावाद का अर्थ है अपने स्वार्थ को भूलाकर दूसरे के भले के बारे में सोचना। परस्पर एक दूसरे की मदद से आज समाज तथा समग्र विश्व का कल्याण ही मानव धर्म है। आपसी मतभेद को आपस में सुलझा कर शांति से रहने की शिक्षा हमें मानवतावाद से ही मिलता है। मानवतावाद से ही हमें अन्य लोगों के दुख दर्द को महसूस करने की और उसे दूर करने की शक्ति मिलता है। मानवतावाद हमें अन्य व्यक्ति के सुखी जीवन की मार्ग को प्रशस्त करने का पाठ पढ़ाता है।

प्रत्येक मानव शक्ति एवं सामर्थ्य का एक असीम स्रोत है। यदि किसी मानव को विकास का पूर्ण अवसर मिले तो वह बहुत उन्नति कर सकता है। मानव की उन्नति के लिए उसका आध्यात्मिक प्रगति होना बहुत ही जरूरी है। प्रत्येक मनुष्य को उसके आध्यात्मिक प्रगति के ओर ले जाने के लिए मानवतावाद अति आवश्यक है।

आज संपूर्ण विश्व यह समझ गया है कि अगर एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के बारे में न सोचें, एक समाज अन्य समाज के बारे में न सोचें तो संपूर्ण मानव जाति का सर्वनाश निश्चित है। इसलिए मानव समाज के हित के लिए सबको एक साथ मिलकर रहना चाहिए, एक दूसरे के भले के बारे में सोचना चाहिए तभी विश्वशांति की स्थापना हो सकता है।

➢ तृतीय अध्याय: मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का मानवतावाद :-

भारत रत्न मौलाना अबुल कलाम आजाद भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री थे तथा मानवतावाद के सर्वश्रेष्ठ समर्थक थे। आजाद मानवतावाद और आधुनिक शिक्षा के माध्यम से एक नव-भारत की निर्माण करना चाहते थे जहां कमजोर को सुरक्षा मिले, जहां युवा अनुशासित हो और प्रत्येक पुरुष एवं महिला सम्मान पूर्वक जीवन जीए। उनका कहना था कि जातिभेद एवं लिंगभेद को मिटाकर सभी को एक दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए। मौलाना आजाद मानवजीवन में शिक्षा को अधिक महत्व देते थे। उनके अनुसार, राष्ट्र का धन देश की बैंकों में नहीं बल्कि विद्यालयों में है।

मौलाना आज़ाद को अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, हिंदी और बंगला सहित अन्य भाषाओं का भी ज्ञान था। उन्हें दर्शनशास्त्र, गणित और इतिहास की भी बारीकी से समझ थी। मौलाना आजाद हमेशा से ही हिंदू-मुसलिम एकता के समर्थक रहे। एक पत्रकार के रूप में मौलाना आज़ाद 'अल हिलाल' के माध्यम से सांप्रदायिक एकता का प्रचार करते थे। मौलाना आजाद का मानना था

कि हिंदुस्तान की समस्या आर्थिक है, सांप्रदायिक नहीं। उन्होंने धर्म के आधार पर पाकिस्तान राष्ट्र के गठन का खुलकर विरोध किया।

हिंदू-मुसलिम एकता पर उनका एक बयान उनकी विश्वास को प्रकट करता है। मौलाना आजाद ने कहा था कि "अगर हिंदुस्तान आजाद नहीं होता है तो इसका नुकसान सिर्फ हिंदुस्तान को होगा परंतु अगर हिंदू-मुसलमान बंट गए तो यह पूरी मानवता का नुकसान होगा।" मौलाना आजाद की कोशिश हमेशा सबको साथ लेकर चलने का था। मुल्क के बंटवारे की बात चलने के दौरान जब हिंसा बढ़ने लगी तो मौलाना कई इलाकों में जाकर हिंदू-मुसलमानों के बीच कमजोर पड़ते रिस्तो को मजबूत बनाने की कोशिश करते रहे। उनका सपना एक ऐसा एकीकृत राष्ट्र का था जहां हिंदू-मुसलमान आपसी भाईचारे के साथ तरक्की के रास्ते पर बढ़ सकें।

- **चतुर्थ अध्याय : रवीन्द्रनाथ टैगोर का मानवतावाद :-**

रवीन्द्रनाथ मानवतावाद के श्रेष्ठ पुजारी थे। उनकी सभी रचनाओं में मानवतावाद का उल्लेख मिलता है। उन्हें उनकी अमरकृति "गीतांजलि" (1913) की रचना करने के लिए साहित्य का नॉवेल पुरस्कार मिला था। टैगोर हमेशा लोगों के भले के बारे में सोचते थे। उन्होंने अपने साहित्य, संगीत एवं कला के माध्यम से समाज में प्रेम और मानवता का प्रचार किया था। उनकी रचनाएं सामाजिक समस्या एवं घटनाओं पर आधारित होता था।

रवीन्द्रनाथ की रचना का पहला तत्व है मानव, प्रकृति और प्रेम। अधिकांश लोग रवीन्द्रनाथ टैगोर को केवल एक कवि के रूप में जानते हैं, लेकिन टैगोर एक महान मानवतावादी दार्शनिक थे। रवीन्द्रनाथ का संपूर्ण साहित्य मानवतावाद की भावना से ओतप्रोत है। उन्होंने हमें सिखाया है कि, मानव प्रेम के बिना अधूरा है और मानवतावाद हमें प्रेम, दया और संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाता है।

रवीन्द्रनाथ एक कवि, कहानीकार एवं दार्शनिक थे। रवीन्द्रनाथ हमें अपने साहित्य के माध्यम से देशप्रेम, मानव-प्रेम, प्रकृति-प्रेम, आत्मशक्ति में विश्वास, जीवन की कष्टों के बीच रहकर सत्य और सौन्दर्य के मार्ग पर चलना सिखाते है।

आज की विवादग्रस्त दुनिया में रवीन्द्रनाथ का मानवतावादी चिन्तन हमें जीवन के श्रेष्ठता की और ले जाता है। विश्वकवि से हमें शिक्षा लेना होगा जीवन पथ पर चलने में जितनी भी बाधाएं क्यों न आए हमें आत्मशक्ति में विश्वास रखकर जीवन की समस्याओं का सामना करना चाहिए। टैगोर की रचनाएं आज भी समाज में उतने ही प्रासंगिक हैं।

टैगोर के अनुसार मानवतावाद मनुष्य के वास्तविक सत्ता को प्रकट करता है। मानवतावादी हमारी मानवीय अहंकार को नष्ट करके हमें आध्यात्मिक उत्थान के लिए प्रेरित करता है। मानवतावाद से उत्पन्न होने वाली अनंत चेतना मानव हृदय में विवेक को जगाता है। मानवतावाद के माध्यम से मानव का आत्म-साक्षात होता है-जिसके कारण हम अवर्णनीय आनंद से जुड़ते हैं।

- **पंचम अध्याय : मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और रवीन्द्रनाथ टैगोर के मानवतावाद का तुलनात्मक अध्ययन :-**

मौलाना अबुल कलाम आजाद और रवीन्द्रनाथ टैगोर दोनों ने अपनी दार्शनिक चिंतन में मानव को विशेष महत्व दिए हैं। इसलिए दोनों दार्शनिक ने मानव को सबसे ऊपर स्थान दिया है। मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ दोनों ने कहा है कि हमें निस्वार्थ भावना से जीवन-यापन करना चाहिए। आजाद और टैगोर दोनों मनुष्य के ईमानदार चरित्र गठन के प्रति महत्व देते थे। दोनों दार्शनिक मानते थे कि मानवता और शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य का सर्वोत्तम चरित्र गठन किया जा सकता है। दोनों दार्शनिकों ने मानवतावाद का प्रचार करते हुए सभी लोगों से प्यार करने की और सभी लोगों का हित करने की बात कही है।

मौलाना आजाद और रवीन्द्रनाथ दोनों हिंदू-मुसलिम एकता बनाए रखने के लिए हमेशा कोशिश करते रहे। रवीन्द्रनाथ हिंदू-मुसलिम एकता स्थापित करने के लिए रक्षाबंधन का आयोजन किए थे। उसी तरह मौलाना आजाद ने हिंदू-मुसलिम एकता बनाए रखने के लिए सभी भारतीयों से भाईचारा बनाए रखने का आवेदन किए थे। इन दोनों दार्शनिकों ने शिक्षा के ऊपर विशेष महत्व दिए थे। एक ओर रवीन्द्रनाथ कहते थे कि शिक्षा व्यक्तित्व गठन का पहला सोपान है तो दूसरी ओर मौलाना आजाद के विचार में शिक्षा मनुष्य में आदर्श स्थापित करता है और वही आदर्श आगे चलकर मनुष्य को बेहतर और अच्छा आदमी बनाता है।

- **षष्ठ अध्याय: वर्तमान संदर्भ में मानवतावाद का प्रासंगिकता**

मानवतावाद वह प्रकाश है जिसके माध्यम से मनुष्य का सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक क्षमता को विकसित किया जा सकता है। इससे मनुष्य समाज का एक उत्तरदायी घटक बनता है एवं वह समाज का बेहतर नागरिक बनकर समाज की उन्नति में अपना बहुमूल्य योगदान देता है। मानवीय मूल्य एवं संस्कृति को पुनर्जीवित एवं पुनः स्थापित करने के लिए मानवतावाद अति आवश्यक है।

वर्तमान में मानव अपनी संकीर्ण मानसिकता को विसर्जित करके, मानवतावाद की शिक्षा में शिक्षित होकर एक नया विश्व रचना की कोशिश कर रहा है जहां आपस मैं प्रेम होगा, व्यक्ति समाज की उन्नति के बारे में सोचेगा, सबके साथ एकजुट होकर रहेगा,

विश्व के हित के लिए बोलेगा। मानव के इस प्रयास को पूरा करने के लिए मानवतावाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है यह मेरा मानना है।

मानवतावाद हमें मैत्रीपूर्ण व्यवहार, दोस्ताना विचार, नैतिक नियमों का अनुपालन, अच्छे कर्म, मनुष्य में प्यार भावना जगाने में मदद करता है। विश्व में भाईचारा और शांति लाने के लिए मानवतावाद अत्यावश्यक है। मानवतावाद के बिना विश्वशांति स्थापित करना लगभग असंभव है।

- **उपसंहार :-**

मानवतावादी दार्शनिक हिंसा, जातिवाद, वर्णवाद में विश्वास नहीं करता है। उसके बदले में मानवतावादी शांति, प्रेम, सद्भाव और मानवकल्याण में विश्वास करता है। बल प्रयोग के माध्यम से कोई भी व्यक्ति के अंदर से हिंसा या जातिवाद को दूर नहीं किया जा सकता है। समाज में होने वाले आतंक और हिंसा को केवल मानवतावाद की शिक्षा से समाज को शिक्षित करके घटाया जा सकता है।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि आज के स्वार्थ, हिंसा एवं आतंक के वातावरण में मानवतावाद का अध्ययन अति आवश्यक है क्यों कि मानवतावाद की शिक्षा से ही मानव संकुचित भावना से ऊपर उठकर मानवकल्याण के लिये कार्य कर सकता हैं और करना भी चाहिए क्योंकि मानव सभी जीवों में विवेकशील है, श्रेष्ठ है।

14. संदर्भ सूची:- (Reference) :

1. Habib, S.Irfan. Maulana Abul Kalam Azad and The National Education System. National University of Educational Planing and Administration, New Delhi, (2010). Page:-27

2. Razeq, Safoora. Nationalism and Maulana Abul Kalam Azad. Pragatishil Prokashak, Kolkata, (2018). Page:-6

3. सक्सेना, डॉ० लक्ष्मी. समकालीन भारतीय दर्शन. लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (2016). पृः-१४६

4. Tagore, Rabindranath. The Religion of Man. George Allen & Unwin Ltd, London, (1922). Page:-113

5. Tagore, Rabindranath. The Religion of Man, George Allen & Unwin Ltd, London, (1922). Page:-16

6. Tagore, Rabindranath. Sadhana. The Maccmillian company, New York, (1915). Page:-82

7. Tagore, Rabindranath. Sadhana. The Maccmillian company, New York, (1915). Page:82

8. Habib, S.Irfan. Maulana Abul Kalam Azad and The National Education System. National University of Educational Planing and Administration, New Delhi, (2010). Page:-46

9. Panwar, H. Sani. India Wins Freedom of Maulana Abul Kalam Azad. New Delhi, (2017). Page: 10

15. ग्रंथ सूची:-

➤ Kumar, Rabindra. Life and works of Maulana Abul Kalam Azad. Atlantic Publication and Distribution, New Delhi, (1991).

➤ Singh, Kamal. "encyclopaedia on Maulana Azad". vol-1, Anmol Publication Pvt. Ltd, New Delhi, (2009).

➤Singh, Kamal. "encyclopaedia on Maulana Azad". vol-2, Anmol Publication Pvt. Ltd, New Delhi, (2009).

➤ Radhakrishnan, S. The philosophy of Rabindranath Tagore. Macmillan and Co. London, (1991).

➤ Tagore, Rabindranath. Personality. Macmillan and Co. Ltd, Landon, (1921).

➤ Tagore, Rabindranath. The Religion of Man. George Allen and Unwin, London, (1927).

➤ Varma, V.P. Philosophical Humanism and Contemporary India. Motilal Banarsidass Indological Publishers and Booksellers, Delhi, (1979).

➤ Tagore, Rabindranath. Lover's Gift and Crossing. The Macmillan and Co. Landon (Indian Edition), (1927).

➤ Das, Sisir Kumar. The Religion of Man: in The English Writings of Rabindranath Tagore. Vol-3, Sahitya Akademi, New Delhi, (2008).

➤ Tagore, Rabindranath. My Life in My Word. Penguin Books, New Delhi, (2006).

➤ Ali B, Sheik. Abul Kalam Azad: Vision and Action. Azad Publication, Mysore, (2001).

➤ Tagore, Rabindranath. Sadhana. The Maccmillian company, New York, (1915).

➤ Reddy, V.N.K. Humanism and Marx. chap-5, Bharatiya Vidya Prakashan, New Delhi, (2000).

➤ Panwar, H. Sani. India Wins Freedom of Maulana Abul Kalam Azad. New Delhi, (2017).

➤ Azad, M.A.K. The Tarjuman al-Quran edited into English by DR. Syed Abul Latif. Pragati Art Printers, Hyderabad, (1981).

➤ Azad, M.A.K. Sallies of Mind: English Translation of Gubar E Khatir. Shipra Publications, New Delhi, (2003).

➤ Tagore, Rabindranath. Gitanjali. The Macmillan Company, New York, (1920).

> सक्सेना, डॉ० लक्ष्मी. समकालीन भारतीय दर्शन. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, (2016).

➤ Sen, Sochin. Political Philosophy of Rabindranath. Progressive Publishers, Kolkata, (2018).

➤ Razeq, Safoora. Nationalism and Maulana Abul Kalam Azad. Pragatishil Prokashak, Kolkata, (2018).

➤ Zareen, Sadia. Maulana Abul Kalam Azad Development of His Literary and Political Thoughts. Progressive Publishers, Kolkata, (2016).

➤ Tagore, Rabindranath. The Religion of Man. George Allen & Unwin Ltd, London, (1922). Habib, S.Irfan. Maulana Abul Kalam Azad and The National Education

➤ System. National University of Educational Planing and Administration, New Delhi, (2010).

➤ Tagore, Rabindranath. Nationalism. The Macmillan Company, New York, (1917).